International Research Journal of Management Science & Technology

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

ढाका (बांग्लादेश) की ढाकेश्वरी देवी मंदिरः उसका ऐतिहासिक स्थापत्य, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण

शोधकर्ता–डॉ. राम विजय शर्मा,

एम.ए. (इतिहास) – प्रथम श्रेणी, पी–एच.डी. (इतिहास), यू.जी.सी. नेट (इतिहास) छत्तीसगढ़ सेट (इतिहास) इतिहासकार, पुरातत्ववेता एवं अंतर्राष्ट्रीय शोधकर्ता, रायपुर भारत

अन्तर्राष्ट्रीय शोधकर्ता डॉ. राम विजय शर्मा
ढाका की ढाकेश्वरी देवी मंदिर पर शोध करते हुए।
तिथि : 03 नवम्बर 2018

1. प्रस्तावना (Introduction)

बांग्लादेश की राजधानी ढाका के पुराने हिस्से में स्थित ढाकेश्वरी राष्ट्रीय मंदिर (Dhakeshwari National Temple) केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह दक्षिण एशियाई इतिहास, उपमहाद्वीप के विभाजन और अल्पसंख्यक पहचान का एक जीवंत प्रतीक है। 'ढाकेश्वरी' ना दो शब्दो के मेल से बना हैः 'ढाका' (स्थान) और 'ईश्वरी' (देवी,) जिसका शाब्दिक अर्थ **''ढाका की संरक्षक देवी''** होता है।

विश्व स्तर पर यह मंदिर एक अनूठी पहचार रखता है क्योंकि बांग्लादेश जैसे मुस्लिम–बहुल देश में यह एकमात्र हिंदू धार्मिक स्थल है जिसे राज्य द्वारा 'राष्ट्रीय मंदिर' का आधिकारिक दर्जा दिया गया है। यह शोध पत्र मंदिर की उत्पत्ति से जुड़े पौराणिक आख्यानों, समय के साथ बदलते इसके स्थापत्य स्वरूप, 1947 और 1971 की ऐतिहासिक विभीषिकाओं के प्रभाव और आधुनिक समय में इसके सामाजिक–राजनीतिक महत्व का एक विस्तृत वैज्ञानिक और ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और नामकरण विवाद (Historical Background & Etymology)

2.1 सेन राजवंश और पौराणिक मान्यताएँ

ऐतिहासिक दस्तावेजों और लोक–कथाओं के अनुसार, ढाकेश्वरी मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में सेन राजवंश के राजा बल्लाल सेन ने करवाया था। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार, राजा बल्लाल सेन की माता ने लांगलबाँध में पवित्र स्नान से लौटते समय इस क्षेत्र के निकट एक पुत्र को जन्म दिया था, जिसके कारण राजा का इस भूमि से गहरा भावनात्मक संबंध था। गद्दी पर बैठने के बाद, राजा बल्लाल सेन को एक स्वप्न आया जिसमें देवी दुर्गा ने घने जंगल के भीतर दबी अपनी एक मूर्ति के बारे में संकेत दिया। राजा ने उस मूर्ति को खोज निकाला और वहाँ एक भव्य मंदिर की स्थापना की। चूंकि मूर्ति जंगल में ''ढकी हुई'' या 'छिपी हुई' स्थिति में मिली थी, इसलिए देवी का नाम 'ढाकेश्वरी' पड़ा, और इसी मंदिर के नाम पर आगे चलकर पूरे शहर का नाम 'ढाका' पड़ गया।

2.2 शक्तिपीठ के रूप में धार्मिक महत्व

सनातन धर्म की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, ढाकेश्वरी मंदिर को माता सती के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। मान्यता है कि जब भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से माता सती के पार्थिव शरीर के टुकड़े किए थे, तब यहाँ देवी सती के मुकुट का रत्न (ब्तवूद श्रमूमस) गिरा था। इस वजह से यह मंदिर तंत्र साधना और शाक्त संप्रदाय के अनुयायियों के लिए सदियों से एक परम पवित्र स्थल रहा है।

2.3 वैकल्पिक ऐतिहासिक सिद्धांत (मग/आराकान संपर्क)

इतिहासकारों और एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बांग्लादेश की Banglapedia रिपोर्ट के अनुसार, मंदिर की उत्पत्ति को लेकर एक अन्य ऐतिहासिक दृष्टिकोण भी मौजूद है। कुछ स्थापत्य साक्ष्य यह संकेत देते हैं कि इस मंदिर का संबंध आराकान (म्यांमार/रखाइन) की श्मगश (Magh) संस्कृति से भी रहा होगा। इस सिद्धांत के अनुसार, आराकान के राजा श्रीसुधर्मा के छोटे भाई मंगत राय (जिन्हें बललाल सेन भी कहा जाता था), ने आराकान से विस्थापित होकर ढाका में शरण ली थी और इस मंदिर का निर्माण कराया था। मंदिर परिसर के भीतर एक बड़ा तालाब, संन्यासियों के लिए आश्रम और तांत्रिक बौद्ध धर्म के तत्व इस बात की पुष्टि करते हैं कि इस स्थान पर विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव रहा है।

2.4 ढाकेश्वरी मंदिर के बारे में अन्य तथ्य:

- **राजनीतिक केंद्रः** यह मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं है, बल्कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए एक मुख्य केंद्र भी है। जब भी हिंदू समुदाय को अपनी माँगें रखनी होती हैं या किसी घटना का विरोध करना होता है, तो लोग अक्सर इसी मंदिर के परिसर में शांतिपूर्ण सभाएं करते हैं।
- **ऐतिहासिक शिलालेखः** मंदिर की दीवारों और उसके आसपास कुछ प्राचीन शिलालेख (Inscriptions) हैं, जो इसके गौरवशाली इतिहास और समय–समय पर हुए जीर्णोद्धार (Renovation) की गवाही देते हैं।
- **प्रसाद की विशेषताः** यहाँ आने वाले भक्तों को शखिचड़ीश का विशेष भोग वितरित किया जाता है, जिसे बहुत पवित्र माना जाता है।
- **पर्यटन स्थलः** यह ढाका आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। यहाँ की वास्तुकला और शांतिपूर्ण माहौल के कारण लोग इसे श्पुराने ढाका की आत्माश ‘ैवनस व्‍िसक कींं) कहते हैं।
- **आस–पास के स्थलः** इसके बहुत करीब ही ढाका विश्वविद्यालय और ऐतिहासिक लालबाग किला (Lalbagh Fort) स्थित हैं, इसलिए पर्यटक अक्सर इन तीनों जगहों को एक ही दिन में कवर करते हैं।

3. वास्तुकला और संरचनात्मक विकास (Architecture and Structural Evolution)

3.1 मूल बनाम वर्तमान वास्तुकला

सदियों के निरंतर आक्रमणों, पुनर्निर्माणों और जीर्णोद्धार के कारण मंदिर का मूल 12वीं शताब्दी का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। वर्तमान वास्तुकला मुख्य रूप से 17वीं और 18वीं शताब्दी (मुगल और उत्तर–मुगल काल) के निर्माण कौशल को दर्शाती है।

3.2 परिसर की आंतरिक संरचना और शैली

मंदिर परिसर को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता हैः

- चार शिव मंदिरः परिसर के भीतर प्रवेश करते ही चार समान आकार के शिव मंदिर दिखाई देते हैं, जो प्राचीन बंगाली स्थापत्य कला की श्चौ–चालाश (चार ढलवां छतों वाली) शैली में बने हैं। ये मंदिर गहरे काले पत्थरों (कश्ती पत्थर) के शिवलिंगों से सुसज्जित हैं।
- मुख्य गर्भगृह (Main Sanctuary)ः मुख्य मंदिर की छत त्रि–स्तरीय गुंबदाकार शिखर (Domical-Sikhara) शैली में बनी है। केंद्रीय गुंबद अगल–बगल के गुंबदों से अधिक ऊँचा है, जिसमें उत्तर–भारतीय छतरी वास्तुकला (Canopy Style) और मुगलकालीन मेहराबों (Arches) का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। केंद्रीय मेहराब पर छह शेरों की नक्काशी की गई है।

4. मूर्तियों का इतिहास और विभाजन की विभीषिका (The Idols - Partition of 1947)

ढाकेश्वरी मंदिर के इतिहास का सबसे संवेदनशील हिस्सा इसकी मूल मूर्ति का विस्थापन है। मूल मूर्ति लगभग डेढ़ फीट ऊँची, अष्टधातु से निर्मित थी, जिसमें माता दुर्गा महिषासुरमर्दिनी के रूप में सिंह पर सवार हैं और उनके दोनों ओर लक्ष्मी, सरस्वती, कार्तिकेय एवं गणेश विराजमान हैं।

[मूल अष्टधातु मूर्ति 12वीं सदी] – (1946–47 विभाजन
[वर्तमान मूर्ति प्रतिकृति (Replica)] – (ढाकेश्वरी देवी मंदिर

- **कोलकाता स्थानांतरण:** वर्ष 1946 के सांप्रदायिक दंगों और 1947 में भारत के विभाजन के समय ढाका में कानून–व्यवस्था अत्यंत संवेदनशील हो गई थी। मुख्य पुजारी (तिवारी परिवार) और श्रद्धालुओं को डर था कि प्राचीन बहुमूल्य मूर्ति को क्षति पहुँचाई जा सकती है। सुरक्षा के मद्देनजर, मूल मूर्ति को अत्यंत गुप्त तरीके से ढाका से पश्चिम बंगाल (कोलकाता) के कुमारतुली क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया।
- **वर्तमान स्थिति:** आज वह मूल ऐतिहासिक मूर्ति कोलकाता के कुमारतुली स्थित ढाकेश्वरी माता मंदिर में पूजी जाती है, जबकि ढाका के मूल राष्ट्रीय मंदिर में उसकी एक सटीक प्रतिरूप (Replica) स्थापित है।

5. 1971 का बांग्लादेश मुक्ति युद्ध और विनाश (1971 Liberation War - Destruction)

वर्ष 1971 का बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम इस मंदिर के इतिहास का सबसे काला अध्याय माना जाता है।

- **ऑपरेशन सर्चलाइट का प्रभाव:** पाकिस्तानी सेना ने मार्च 1971 में अपनी सैन्य कार्रवाई के दौरान ढाका के रमना काली मंदिर को पूरी तरह जमींदोज कर दिया था और उसके ठीक बाद ढाकेश्वरी मंदिर को अपना निशाना बनाया।
- **अपवित्रीकरण और दुरुपयोग:** पाकिस्तानी सेना ने मंदिर के मुख्य भवनों को भारी तोपखाने से क्षतिग्रस्त कर दिया और मंदिर परिसर पर कब्जा कर लिया। इस पवित्र परिसर का उपयोग पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा गोला–बारूद भंडारण इकाई (Ammunition Depot) और अस्तबल के रूप में किया गया, जिससे इसकी धार्मिक पवित्रता को गहरी ठेस पहुँची। मंदिर के कई पुजारियों और वहां शरण लिए नागरिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी।

6. आधुनिक सामाजिक–राजनीतिक महत्व और चुनौतियाँ (Socio & Political Significance)

6.1 'राष्ट्रीय मंदिर' का दर्जा (1996)

वर्ष 1988 में जब बांग्लादेश के संविधान में बदलाव कर इस्लाम को राज्य धर्म घोषित किया गया, तब हिंदू संगठनों ने अपनी धार्मिक स्वतंत्रता और अस्तित्व की रक्षा के लिए एक बड़ा आंदोलन चलाया। इसके परिणामस्वरूप, वर्ष 1996 में सरकार ने ढाकेश्वरी मंदिर को आधिकारिक

तौर पर 'ढाकेश्वरी जातीय मंदिर' (National Temple) घोषित किया। इसके बाद से यहाँ प्रतिदिन सुबह बांग्लादेश का राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है और राष्ट्रीय शोक के दिनों में ध्वज को नियमानुसार आधा झुकाया जाता है।

6.2 सांप्रदायिक सौहार्द का केंद्र

यह मंदिर बांग्लादेश में बहुसांस्कृतिक समाज का एक बेहतरीन उदाहरण पेश करता है:

- **दुर्गा पूजा और जन्माष्टमी:** यहाँ आयोजित होने वाली दुर्गा पूजा पूरे देश में सबसे बड़ी होती है। पूजा के दौरान देश के प्रधानमंत्री और प्रमुख राजनीतिक नेता यहाँ आते हैं। जन्माष्टमी के अवसर पर यहाँ से निकलने वाली विशाल शोभायात्रा में हिंदू–मुस्लिम दोनों समुदायों के लोग भाग लेते हैं, जो आपसी भाईचारे को सुदृढ़ करता है।

6.3 समकालीन चुनौतियाँ

- भूमि अतिक्रमण (Land Encroachment): विभाजन और युद्ध के बाद मंदिर की सैकड़ों एकड़ वक्फ/देवोत्तर संपत्तियों पर स्थानीय भू–माफियाओं द्वारा अवैध कब्जे कर लिए गए हैं, जिसके खिलाफ कानूनी संघर्ष आज भी जारी है।
- **अल्पसंख्यक सुरक्षा:** बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता के समय यह मंदिर हमेशा सुरक्षा के दृष्टिकोण से संवेदनशील रहा है, जिसके कारण अक्सर स्थानीय स्वयंसेवकों और सुरक्षा बलों को इसकी चौबीसों घंटे निगरानी करनी पड़ती है।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

ढाकेश्वरी राष्ट्रीय मंदिर केवल ईंट–पत्थरों और गुंबदों से बनी एक संरचना नहीं है, बल्कि यह बंगाल के गौरवशाली अतीत, विभाजन के दर्द, युद्ध के विध्वंस और आधुनिक बांग्लादेश की धर्मनिरपेक्षता की कशमकश की एक ऐतिहासिक गाथा है। तमाम ऐतिहासिक प्रताड़नाओं और वास्तुकला में आए बदलावों के बावजूद, यह मंदिर आज भी बांग्लादेश के करोड़ों हिंदुओं के आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पहचान का मुख्य केंद्र बना हुआ है। इसका संरक्षण केवल एक समुदाय की धार्मिक आवश्यकता नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया की साझा सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने के लिए अनिवार्य है।

शोध संदर्भ (References for Academic Purpose)

1. स्वयं का शोध कैंप–ढाका (बांग्लादेश) दिनांक 03 नवम्बर 2018 से 06 नवम्बर 2018
2. भेंटवार्ता श्री गोपेश शर्मा, स्नातकोत्तर छात्र (इतिहास) ढाका विश्वविद्यालय, ढाका (बांग्लादेश) आवास–जगन्नाथ हॉल तिथि 03 नवम्बर 2018
3. भेंटवार्ता श्री राजीव विश्वास स्नातकोत्तर छात्र (इतिहास) ढाका विश्वविद्यालय, ढाका (बांग्लादेश) आवास–जगन्नाथ हॉल तिथि 03 नवम्बर 2018
4. भेंटवार्ता श्री फैज अहमद, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, पी–एच.डी. शाखा, ढाका विश्वविद्यालय, ढाका (बांग्लादेश) तिथि 04 नवम्बर 2018
5. भेंटवार्ता श्री जमाल साहब, डिप्टी रजिस्ट्रार (पी–एच.डी. शाखा) ढाका विश्वविद्यालय, ढाका (बांग्लादेश) तिथि 04 नवम्बर 2018

6. Asher, Catherine B. Architecture of Mughal India. Vol. 1, pt. 4. Cambridge: Cambridge University Press, 1992.
7. Bangladesh National Museum Archives.
8. Bandopadhyaya, S. Caste, Culture, and Hegemony: Social Cloisters in Partitioned Bengal. Oxford UP, 2021.
9. Banglapedia (Asiatic Society of Bangladesh)-"Dhakeshwari Temple History and Architecture".
10. Chatterji, Joya. The Spoils of Partition: Bengal and India, 1947-1967. Cambridge UP, 2007.
11. Dani, Ahmad Hasan (1962). Dhaka: A Record of its Changing Fortunes.
12. Hasan, Syed Mahmudul. Antiquities of Dacca. Dacca: Concept Publishing Company, 1980.
13. Journal of Historic Preservation & Archaeology (2012/2023)-"Structural Transformation of Old Dhaka Monuments".
14. Jahan, Rounaq. Pakistan: Failure in National Integration. University Press Limited, 1997.
15. Majumdar, R. C. History of Bengal (Vol. 1: Hindu Period). Dacca: University of Dacca, 1943.
16. Michell, George, editor. Brick Temples of Bengal: From the Archives of David McCutchion. Princeton UP, 1983.
17. Official Records of the Dhakeshwari Temple Management Committee.
18. Raghavan, Srinath. 1971: A Global History of the Creation of Bangladesh. Harvard UP, 2013.
19. Saraswati, S. K. (1976). Architecture of Bengal.
20. Sen, S. Social and Religious History of the Indian Subcontinent: The Ancient Period. New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors, 1999.
21. Wikipedia Academic Archives - "Dhakeshwari National Temple Evolution".

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM